कर्फ्यू के घेरे में नारीत्व को प्रणाम

गीतांजलि सक्सेना

नौ दिवसीय हिन्दू त्योहार नवरात्रों पर लगा कोरोना का ग्रहण ... यह कोई खगोलीय या आकाशीय घटना नहीं है। इस स्थिति में लाने का श्रेय किया धरा हम सब का है। आज गली गलियारे सूने पड़े हैं। ना ही पंडालों की वह रौनक, भक्ति में लीन माता के भक्तों की भीड़ भी नदारद है। हम सब हो गये वंचित धूम मचाते रतजगा जागरणों की गूंज से भरे देवियों के रंगों से भरे जलसों की रौनक से। सब कुछ बंद मुट्ठी में रेत निकलती जैसा हो गया। उत्सवों का रंग फीका होने के कारणों के पीछे हम सबों का गैर जिम्मेदाराना रवैया ही रहा। कोरोना की लड़ाई में अपनी भूमिका को हल्के से लेने लगे। अपनी गतिविधियों पर लगाम न लगाने के कारण उसका हर्जाना कोरोना की दूसरी लहर से आमना सामना हो रहा है। एक बार फिर पुरानी उन सब परिस्थितियों को, जिन्हें पीछे छोड़ते आगे बढ़ते, जिन्दगी की गाड़ी की रफ्तार पकड़ ही ली थी कि फिर ब्रेक लग गई। यहाँ तक कि कर्फ्यू लगाने तक की नौबत आ गई। वास्तव में बेहद चिन्ता का विषय और दुखदायी है।

कैसे भूल गये कोविड़ 19 का कहर। पूरी दुनिया में हुई उसकी तबाही का मंजर, जिसने मानव सभ्यताओं के इतिहास में नये पन्नों को ही दर्ज कर डाला, जिन्हें न सिर्फ आने वाली पीढ़ी याद रखेगी, बल्कि कोविड काल के चक्रव्यूह में देशवासी फँसते जा रहे हैं। फिर लौट आई है, कठिन शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य ले ग्रसित स्थिति ... हो रहा उनका वर्णन। भावनात्मक संवेदनाओं से भरे बीते अनुभवों से कुछ सबक नहीं सीखने की नासमझी की वजह से हम जहां के तहां आ गये। देश को शर्मसार करने की कोशिश इस बार भारी पड़ेगी। सरकारी तंत्र तिलमिलाया हुआ अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा को पूरा करने में अपनी जिम्मेदारियों को निभाने की प्राथमिकता से भटके हुए है। ऐसे कठिन समय में चुनावी रैली का माहौल कतई सही नहीं है। अपने पक्ष में बेहतर चुनावी नतीजों पर अधिक परिश्रम करने की बजाय कोरोना के बचाव के तहत किए प्रयासों को अपनाना समझदारी होगा। वर्तमान स्थिति में नागरिकों की सुरक्षा सर्वप्रथम, देश हित में यही शोभा देता है।

ऐसे माहौल में कि जब कोरोना का संकट पुनः मंडरा रहा है। हर शख्स के लिए चिन्ता का विषय है। इसके बचाव के लिए किए गये गत सब प्रयासों और सुरक्षा की पद्धतियों को असफल कर दिया गया।

आत्मचिन्तन की जरूरत है कि हम कहाँ जा रहे हैं। जिस देश की संस्कृति में हर पर्व का आध्यात्मिक महत्व है। सांस्कृतिक धरोहर में त्योहारों को मनाने की अहम जगह है। वहाँ आज के परिवेश में उत्सव मनाना बस एक खानापूर्ति या तसल्ली का अहसास माना जा सकता है।

अपने विषय से न हटते हुए नवरात्र के ... नौ दिन के दौरान देवी दुर्गा के अलग-अलग रूपों में पूजा करना हिन्दू धर्म में सबसे लम्बे समय तक चलने वाली धार्मिक परंपराओं में से एक है। इस पर्व की विशेषता यह है कि यह नारी शक्ति को नमन करते हुए मनाया जाता है। देवी पूजा को हिन्दू धर्म में शक्ति और ऊर्जा क्षमता को एकीकरण की अवधारणा के साथ जोड़कर देखा जाता है।

शब्द शक्ति कई विचारों को स्पष्ट करता है। यह एक मौलिक ब्रह्मांडीय ऊर्जा है, जो उसके निर्माण, रखरखाव और विनाश के लिए जिम्मेदार है। नारी स्त्री को ब्रह्मांड की निर्माता के रूप में देखा जाता है, क्योंकि सृष्टि ने उन्हें सृजन शक्ति से अलंकित किया है। मां की आराधना, चेतना जागृति व ऊर्जा का संचार करती है। यह मां शक्ति की अभिव्यक्ति को दर्शाता है।

जीवन दर्शन

यह एक मौलिक ब्रह्मांडीय ऊर्जा है, जो उसके निर्माण, रखरखाव और विनाश के लिए जिम्मेदार है। नारी स्त्री को ब्रह्मांड की निर्माता के रूप में देखा जाता है, क्योंकि सृष्टि ने उन्हें सृजन शक्ति से अलंकित किया है।

देश के कई हिस्सों में शक्ति के विभिन्न पहलुओं की प्रतीक देवी को सर्वशक्तिशाली के रूप में देखते हैं। इस पर्व से जुड़ी कथा के अनुसार, दुर्गा ने अपनी शक्तियों से ब्रह्मांड की स्थिरता को खतरा पैदा करने वाले असुर व महिषासुर का वध करके विजय हासिल की थी। हिन्दू धर्म शास्त्रों में वर्णित शक्ति को देवी के स्वरूपों में देवताओं के जीवनसाथी के रूप में जुड़ा हुआ देखा जाता है।

पूरे भारत में ग्रामीण संस्कृति में सदियों से चली आ रही दैवीय शक्ति से जुड़ी अनेक परम्पराएं हैं, जिनमें अनुष्ठान, पूजा आदि का चलन है। यही नहीं, पुरुष वर्ग भी पृथ्वी माता को देवी शक्ति के रूप में पूजा करते हैं। जो बीज को पोषण करती है, और उसे फलित करती है। कृषकों का यह विश्वास व श्रद्धा पुष्टि करता है कि मनुष्य वास्तव में नारी स्त्री पर निर्भर है, क्योंकि वह जीवन, भोजन और शक्ति प्रदान करने की क्षमता रखती है। नवरात्रों में मां के नौ स्वरूपों मां शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, मां चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, मां कात्यायनी, कालरात्रि, मां गौरी व सिद्धिदात्री की पूजा क्रमानुसार की जाती है। देवी मां के सभी स्वरूप अत्यंत कल्याणकारी और हर विपदा को हरने वाले हैं। सभी स्वरूपों का अपना महत्व है, जो उसकी शक्ति को दर्शाता है। धर्म शास्त्रों के अनुसार, नवरात्रों के नौ दिन नौ रंग मां दुर्गा के हर रूप को समर्पित हैं।

छठे दिन को षष्ठी कहते हैं। मां कात्यायनी की पूजा लाल रंग की पोशाक पहन कर करना शुभ माना जाता है। सप्तमी के दिन काल रात्रि की पूजा में नीला रंग पहनना शुभ कल्याणकारी होता है। इससे नकारात्मक शक्तियों का नाश होता है। आठवें दिन मां महागौरी के पूजन में गुलाबी रंग धारण करना अति शुभ है। नौवें दिन मां सिद्धिदात्री समस्त कार्यों में सिद्धि प्राप्त करने वाली है। इस दिन बैंगनी रंग पहनना और कन्याओं को भोजन खिलाना नौ दिन पूजा को सम्पूर्ण करता है।

काश! बस में होता कि कोरोना राक्षस वध की अर्जी देवीदरबार में पहुंचा पाते। हाँ सब मिलकर मां से अपनी प्रार्थनाओं में, कोरोना दहन के लिए सुरक्षा के सब प्रयत्नों को ईमानदारी से, अपनी जिम्मेवारियों को हवन की सम्पूर्ण आहूति समझ कर निभाते रहें। याद रहे, त्यौहार मनाने के पीछे भावना सिर्फ बुराई या अज्ञानता पर विजय प्राप्त करने से ही है। यह उल्लेखनीय है कि नारीशक्ति शब्द को न केवल वर्ल्ड वर्ड ऑफ ईयर चुना गया, बल्कि साल 2018 में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में भी शामिल कर लिया गया। है ना अनूठी और दिलचस्प बात ... नारीत्व को प्रणाम

आज देश की अनेकों महिलाएं नारी शक्ति पुरस्कारों से सम्मानित हैं। हर क्षेत्र में महिलाएं अपना परचम लहरा रही हैं। देश का इतिहास उनकी कामयाबी के किस्सों से भरपूर है। सभी महिलाओं को अपने नारीत्व पर गर्व होना चाहिए।